शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

समाज पर आधुनिकीकरण का प्रभाव का अध्ययन : महिलाओं के सन्दर्भ में

संजय कुमार गौतम
सहा.प्राध्यापक - समाजशास्त्र
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त महाविद्यालय, चिरगांव झाँसी (उ.प्र.)

शोध सार

आधुनिकीकरण, ग्रामीण और कृषि प्रधान समाज से धर्मनिरपेक्ष, शहरी और औद्योगिक समाज में परिवर्तन। यह औद्योगीकरण से निकटता से जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे समाज आधुनिक होता है, व्यक्ति का महत्व बढ़ता जाता है, धीरे-धीरे समाज की मूल इकाई के रूप में परिवार, समुदाय या व्यावसायिक समूह की जगह लेता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण गाँवों में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। गाँवों की सामाजिक व्यवस्था, भाईचारा, जाति एवं स्थानीयता पर आधारित थी अब उसका स्वरूप बदल रहा है परिवार में व्यक्तिवादिता बढ़ी है और सामूहिकता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। आधुनिकीकरण के कारण समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक प्रभाव के साथ नकारात्मक प्रभाव भी देखने में आये हैं। जहाँ उन्होंने अपने आपको आधुनिक बनाया है वहीं नकारात्मक प्रभाव के रूप में व्यक्तिवादिता, फिजूलखर्ची आदि का प्रभाव भी इसी आधुनिकीकरण के कारण आया है।

बीज शब्द

आधुनिकीकरण, व्यक्तिवादिता, व्यवसायिक, नियंत्रण, दृष्टिकोण, प्रक्रिया, विश्लेषण, मानदंडो, अभूतपूर्व।

भूमिका

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने वैज्ञानिक सोच के आगमन के बाद से मनुष्य के जीवन और मानव प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। मनुष्य सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सौंदर्य और आध्यात्मिक जीवन के क्षेत्रों में तर्क और व्यवहार के माध्यम से विचार और व्यवहार के नए दृष्टिकोणों को सामने ला रहा है। सामाजिक अलगाव के कारण महिलाएं विकास के कई लाभों से वंचित थी। सामान्य रूप से मानव जागरूकता और विशेष रूप से लोकतंत्र के आगमन के साथ, महिलाओं ने एक नया सामाजिक दर्जा प्राप्त किया। यह सब शिक्षा का

परिणाम है। इसके अलावा, नारी शिक्षा पर अमिट छाप आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने भी छोड़ दी है, इसलिए, शिक्षा और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया दोनों को महिलाओं के विकास के लिए जिम्मेदार माना गया है। देश की आजादी के बाद से, भारत में हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में सामाजिक परिवर्तन अभूतपूर्व हो गया है। देश की नीतियों और कार्यक्रमों को विशेष रूप से शिक्षा,अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामान्य जनकल्याण के क्षेत्र में शुरू किया गया है। इन कार्यक्रमों ने हमारे सामाजिक जीवन की प्रक्रिया के परिवर्तन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। आधुनिक शिक्षा ने जीवन के प्रति नए मूल्यों,मानदंडों,आशाओं और आकांक्षाओं को जन्म दिया है। इस परिवर्तन ने देश के कोने-कोने में व्याप्त सामाजिक परिवर्तन की शक्तियों को उत्पन्न किया है। आदिवासी क्षेत्र जो अंग्रेजों के दौरान राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से बाहर रहे, इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण की सामान्य प्रवृत्ति से अवगत कराया गया है और अब उनको राष्ट्रीय जीवन की प्रगति पर लाया गया है।

शोध विस्तार

आधुनिकीकरण की अवधारणा, लंबे समय से एक सार्वभौमिक परिभाषा और विश्लेषण के उपयुक्त स्तर पर सहमति की कमी से ग्रस्त है। यह शब्द सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया पर लागू होता है, जिससे कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों से सामान्य विशेषताओं का अधिग्रहण करते हैं (डेविड, सिल्स, 1972), इसका उपयोग तर्कसंगतता और धर्मनिरपेक्षता के विकास और एक ऐसी प्रक्रिया के लिए किया जाता है जिसके द्वारा मनुष्य को अत्याचारी शासन, कुरीतियों से छुटकारा मिल जाए, जैसे कि अंधविश्वास से। यह अर्थशास्त्र और राजनीति में, सामाजिक व्यवहार में व्यक्तिगत दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तनों से भी संबंधित है। शहरीकरण कैसे होता है, कैसे सामाजिक संरचना में परिवर्तन होता है, शैक्षिक प्रणाली कैसे परिवर्तित होती ह और औद्योगीकरण कैसे होता है। वास्तव में आधुनिकीकरण का अर्थ वर्तमान समय के अनुकूल होना है, पुरानी आदतों, रीति-रिवाजों को त्यागते हुए परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार परंपराओं और दृष्टिकोण में परिवर्तन होता है। आज जो माना जाता है, वह कुछ वर्षों के बाद शायद वैसा न हो। कुल मिलाकर यह एक के बाद एक चरण में हासिल की जाने वाली एक सतत प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का समाज में प्रचार एवं प्रसार होता है जिससे समाज में व्यक्तियों के स्तर में सुधार होता है और समाज अच्छाई और विकास की ओर बढ़ता है। - देखा जाए तो आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है इसका संबंध मुख्य रूप से व्यक्ति के विचारों

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

एवं मनोवृत्तियों के तरीकों में बदलाव, नगरीकरण में वृद्धि साक्षरता का बढ़ना प्रति व्यक्ति आय का बढ़ना तथा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि जैसे परिवर्तन से होता है। -(डेनियल लर्नर)

आधुनिकीकरण को प्रक्रिया है जिससे ऐतिहासिक रूप से उत्पन्न संस्थाएं तेजी से बदलती हुई नई जिम्मेदारियों के साथ अनुकूलित होती हैं जिसमें वैज्ञानिक प्रगति से जुड़ी अपने परिवेश पर नियंत्रण की क्षमता वाले मनुष्य के ज्ञान में अभूतपूर्व वृद्धि दिखाई देती है। -(सी.ई. ब्लेक)

आधुनिकीकरण को सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिसमें सामाजिक गतिविधि के आर्थिक घटक में विकास होता है। जब राष्ट्र या राज्य के स्तर पर विचार किया जाता है, तो व्यापक रूप से साझा राय होती है। धारणा का तात्पर्य 'वृद्धि" शब्द में निहित परिवर्तन से है। इसे मानव समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के रूप में, संक्षेप में व्याख्यायित किया जा सकता है। इस तरह के परिवर्तन निश्चित रूप से सामाजिक संरचना के एक व्यापक तन्त्र को प्रभावित करते हैं, जो राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय और यहां तक कि व्यक्तित्व में परिवर्तन तक के क्षेत्र में होते हैं।

आधुनिकीकरण सतत चलने वाली प्रक्रिया है हॉलपर्न (1965) ने आधुनिकीकरण को रूपान्तरन से संवर्धित माना है जिसके अन्तर्गत समस्त पहलुओं, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, अध्यात्मिक का रूपान्तरण किया जाता हे। इसके द्वारा परम्परागत समाजों में परिवर्तन लाया जाता है। आधुनिकीकरण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है इसमें औद्योगीकरण, नगरीकरण, संचार के साधनों में परिवर्तन, चिकित्सा के क्षेत्र में नवीनता तथा परम्परागत शिक्षा के स्थान पर तकनीकी शिक्षा का विकास होता है। इसके अलावा धर्म के क्षेत्र में परम्परागत से अलग बौद्धिकता की ओर वरन तथा सामाजिक क्षेत्र में प्राचीन मूल्यों के स्थान नए मूल्यों को अपनाया जाता है। इसे ही आधुनिकीकरण कहते हैं।

डेनिफल लर्नर (2005) ने आधुनिकीकरण की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया है-
1. शिक्षा तथा गतिशीलता में वृद्धि
2. नगरीकरण

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

3. शिक्षित लोगों के मध्य सहभागिता में वृद्धि
4. जनता का राजनीतिकरण
5. औद्योगीकरण
6. लौकिकीकरण

भारत गांवों का देश है यहां की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी ग्रामों में निवास करती है। ऐतिहासिक काल में भारत में ग्रामीण और शहरी महिलाओं की भूमिका में बहुत अधिक अंतर नही था क्योंकि तकनीकी की प्रधानता न होने से श्रम का समान महत्व नगर और गाँवों में था। पांरपरिक अर्थव्यवस्था होने के कारण कुम्हार के साथ कुम्हारिन और लुहार के साथ लोहारिन की प्रास्थिति का उल्लेख किए बिना सामाजिक ताने-बाने को नहीं समझा जा सकता है।

महिलाएं ग्रामीण समाज का आधा हिस्सा है उनका योगदान और उनके लिए योगदान पर ही समाज की उन्नति का भार निहित है। भारतीय ग्रामों का आधुनिकीकरण भारत पर ब्रिटेन के प्रभुत्व के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। आइजेन स्तेड़ ने लिखा है, "ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक,आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो कि सत्रहवीं से उन्नीसवी शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरीका में और बीसवीं शताब्दी तक दक्षिण अमेरीका, एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई।" यह एक दिशा या क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन नहीं वरन् यह एक बहुदिशा वाली प्रक्रिया है। साथ ही यह किसी भी प्रकार के मूल्यों से बंधी हुई नहीं है फिर भी कभी-कभी इसका अर्थ अच्छाई से ले लिया जाता है।

"मैरियन जे लेवी ने आधुनिकता की परिभाषा में शक्ति के जड स्रोतों के प्रयोग को महत्व प्रदान किया है।" ग्रामीण भारत में इस परिप्रेक्ष्य में पहले हाथ की चक्की से आटा महिलाएँ पीसती थीं। अब विद्युत चक्की से पिसा हुआ आटा उन्हें मिल जा रहा है पुनः पहले भोजन का पकना चूल्हे से होता था अब उज्जवला योजना के तहत प्रत्येक परिवार को गैस कनेक्शन दिए जा चुके है इससे महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है और श्रम में कमी परिलक्षित हुई है। ग्रामीण जीवन में पहले महिलाएँ सर पर पानी भरने का कार्य करती थी अब यांत्रीकरण के कारण ऐसे कार्य सीमित हो गए हैं।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

डॉ. योगेन्द्र सिंह ने आधुनिक होने का अर्थ फैशनेबल से लिया है। आज टेलीविजन व संचार क्रांति के परिणामस्वरूप उपभोक्तावादी संस्कृति पर प्रसार हुआ है जिसका प्रभाव ग्रामीण महिलाओं के जीवन भर पड़ना स्वाभाविक है। ग्रामीण महिलाएं पाश्चात्य परिधान पहन रही हैं और बाह्य देशों के आचरण का भी अनुसरण कर रही है। ग्रामीण महिलाएं अपने पहनावे व बोलचाल में परिवर्तन ला रही हैं। ग्रामीण महिलाओं के जीवन में शिक्षा का प्रसार ने दूरगामी प्रभावों का सूत्रपात किया है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो हमे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है अज्ञानता को नष्ट कर देती है तथा मानव को मनुष्यता के उच्च बिन्दुओ तक अग्रसर कर देती है।

कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि आधुनिकीकरण की किसी भी परिभाषा का प्रारंभिक बिंदु समाजों की प्रकृति में नहीं है बल्की लोगों की विशेषताओं में है. जो उस समाज का हिस्सा होते हैं (टोरस्टन एंड हुसैन, 1985, इंकेल्स एंड स्मिथ 1974)। इस प्रकार यह लोगों का स्वभाव और मानसिक स्वैया है. जो संगठन के उच्च स्तर को बदलने के लिए एक प्रकार की पूर्व कन्डीशन है। इंकेल्स एंड स्मिथ (1974.3) ने अपने प्रसिद्ध शोध "बीकमिंग मॉडर्न" में व्यक्तिगत आधुनिकता के अनुभवजन्य सत्यापन का एक व्यवस्थित अन्वेषण दिया। इंकेल्स और उनके सहकर्मियों (1974) ने "आधुनिक" शब्द का इस्तेमाल व्यक्तिगत कामकाज की एक विधा के रूप में किया। छह विकासशील देशोंः अर्जेंटीना, चिली, भारत, इजराइल, नाइजीरिया और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में से प्रत्येक में लगभग 1000 श्रमिकों पर आधारित ईकलेस, और स्मिथ की शोध रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक समाजों में पुरुषों द्वारा साझा किए गए कुछ दृष्टिकोण है, जिसमें सांस्कृतिक अंतर शमिल नहीं है। आधुनिक व्यक्ति के संदर्भ में इलेक्स इनकेल्स और स्मिथ द्वारा दिए गए दृष्टिकोण और व्यवहार पैटर्न की एक श्रृंखला की रूपरेखा इस प्रकार है –

नए विचारों और नए तरीकों को स्वीकार करने की तत्परता, एक सकारात्मक समय बोध जो पुरुषों को अतीत की तुलना में भविष्य और वर्तमान में अधिक रुचि रखता है। टीसी एस एन इंसेनस्टेड (1969) के अनुसार-" ऐतिहासिक आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के प्रति परिवर्तन की प्रक्रिया है जो पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में 17 वी शताब्दी से 19 वीं शताब्दी में विकसित हुई हैं और 19 वीं और 20 वीं शताब्दी में दक्षिण अमेरिका, एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीपों के साथ अन्य यूरोपीय देशों में फैल गई है। लर्नर (1962) की अवधारणा मुख्य रूप से पश्चिमीकरण पर

आधारित है। उनके अनुसार, "आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्थानों के साथ-साथ निजी आकांक्षाओं को छूती हुई प्रत्यक्षवादी भावना शामिल है।" आधुनिक भारत के संदर्भ में, श्रीनिवास ने कहा कि आधुनिकीकरण उन्नत "मीडिया एक्सपोजर द्वारा चिह्नित है, जो व्यापक आर्थिक भागीदारी (प्रति व्यक्ति आय) राजनीतिक भागीदारी (मतदान) और सामाजिक गतिशीलता में हुई वृद्धि से जुड़ा है। योगेंद्र सिंह (1973) द्वारा दिखाए गए एक मॉडल के माध्यम से बताया "कि समाज, आधुनिकता की परम्परा से बदलता है और इस तरह छोटी-छोटी परंपरा धीरे-धीरे महान परंपरा में बदल जाती है।" उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण की अवधारणा का पता लगाने की आवश्यकता है। कुछ हद तक आधुनिकीकरण पर शोध साहित्य में, कई सामाजिक-विज्ञान विषयों के विशिष्ट सैद्धांतिक लेख देखना संभव है, जो सामाजिक परिवर्तन के परिणामों पर आधारित हैं। सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने व्यक्तिगत स्तर पर आधुनिकता की संकल्पना की है जिसमें कुछ सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित दृष्टिकोण और व्यवहार पर जोर दिया गया है। व्यक्तियों के व्यवहार और व्यवहारिक क्रिया प्रवृत्तियों में परिवर्तन देखकर अवधारणा को परिचालित किया जा सकता है।

हालांकि, अलग-अलग वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण अलग-अलग हैं, जिन्हें संक्षेप में निम्न क्षेत्रों को प्रस्तुत किया जा सकता है-आधुनिकीकरण को किसी के आंतरिक गुणों के संदर्भ में माना जाता है जैसे कि किसी के व्यवहार में तर्कसंगतता, निष्पक्षता, व्यापक सौच और लचीलेपन की वृद्धि। एक समाजशास्त्री के लिए, आधुनिकीकरण विभेदीकरण की प्रक्रिया है जो आधुनिक समाजों की विशेषता है। एक अर्थशास्त्री के लिए आधुनिकीकरण का अर्थ आर्थिक विकास और भौतिक उन्नति से है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अनुप्रयोग के संबंध में, यह आधुनिक समाज के तकनीकी उन्नत मॉडलों को अनिच्छा से पश्चिमीकरण के साथ संदर्भित करता है। इसके अलावा, आधुनिकीकरण की अवधारणा में निम्नलिखित विशेषताएं प्रतीत होती हैं –

पुराने से नए में बदलाव ।
परिवर्तन के लिए समायोजन।
परिवर्तन की प्रक्रिया के प्रति गतिशील और बाहरी दृष्टिकोण।
कौशल के लिए क्षमताओं का विकास परिवर्तन की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए व्यवहार।

आर्थिक और भौतिक प्रगति के लिए नए तकनीकी मॉडल का विकास शिक्षा, जिसे आधुनिक समाज में कौशल, दृष्टिकोण और मूल्य प्रदान करने वाले एक संगठित प्रयास के

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -10
August
2024

रूप में देखा जाता है, और जो समाज में रहने योग्य बनाने की प्रथम सीढ़ी है, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फ्रेडरिक हार्बिन्सन और चार्लस ए. मेयर्स (1980) द्वारा दिया गया बयान शिक्षा वह कुंजी है जो आधुनिकता के द्वार को खोलती है और संबद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा दिया है। शिक्षा के क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि आधुनिकीकरण का मतलब शिक्षा, शिक्षित और कुशल नागरिकों का निर्माण करके उन्हें समाज में फैलाना है। जिससे वह समाज में आधुनिकीकरण को बड़े स्तर पर विकसित कर सकें। स्वतंत्र भारत में समाज के स्वरूप और उसके आदर्शों में एक और परिवर्तन आया। शिक्षा को राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने का उद्देश्य दिया गया था। भारत में शिक्षा आधुनिक भारत की जरूरतों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपयोगिता और आदर्शवाद के बीच एक संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है। प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण आज का सामाजिक जीवन आदिम सामाजिक जीवन से बहुत अलग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हाल के उल्लेखनीय विकासों ने मानवीय धारणा और मूल्यों में परिवर्तन किया है। नतीजतन, हाल ही में शिक्षा को दिए गए उद्देश्यों में से एक क्षमता विकसित करना और तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। हाई-टेक विकास के अलावा, आर्थिक परिवर्तनों ने भी सामाजिक जीवन को काफी प्रभावित किया है। एस.एन. ईसेनस्टेड (1966) ने ठीक ही कहा है कि, आधुनिक समाजों में शैक्षणिक संस्थानों में विशेषताओं के विश्लेषण के लिए यह शायद सबसे अच्छा प्रारंभिक बिंदु है, जो कि आधुनिकता की मांग के साथ विकसित होने वाली शैक्षिक सेवाओं की मांग और आपूर्ति के अनुरूप हो योगेंद्र सिंह के शब्दों में, "शिक्षा भारत में आधुनिकीकरण के सबसे प्रभावशाली साधनों में से एक रही है। इसने लोगों की राष्ट्रवाद, उदारवाद और स्वतंत्रता के लिए भावनाओं को प्रेरित किया है। यह अकेले ही प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के विकास के लिए जिम्मेदार रही है। जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिए एक आंदोलन को आगे बढ़ाया बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधारों के लिए एक अथक संघर्ष भी किया।" शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आधुनिकीकरण है। आधुनिकीकरण एक व्यापक अवधारणा है जिसका उद्देश्य समाज में गहन गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों को धारण करना, उनका वर्णन करना और उनका मूल्यांकन करना है।

आधुनिकीकरण लाने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका के बारे में पश्चिम और भारत में शोध किए गए हैं। उनमें से अधिकांश ने दोनों के बीच सकारात्मक संबंध दिखाया है। हालाँकि, सॉन्डर्स (सॉन्डर्स, जॉन वी.डी. 1969) ने ब्राजील में शिक्षा और आधुनिकीकरण पर अपने अध्ययन में ज्ञात किया है कि यह आधुनिकता को कमजोर करता है। उन्होंने टिप्पणी

की, "ब्राजील के स्कूल में, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, जहां व्यक्तित्व विकास पर उनका प्रभाव सबसे अधिक होता है, व्यक्तित्व लक्षणों को विकसित करने के बजाय आधुनिकीकरण के लिए जोर देते हैं, और जो समाज के नवप्रवर्तक को कमजोर करता है।" लर्नर ने अपने शोध कार्य में 'पारंपरिक समाज के पारित होने पर जोर दिया" कि साक्षरता, आधुनिकीकरण प्रक्रिया में अंतर्निहित बुनियादी व्यक्तिगत कौशल है और जो प्रतिभागी समाज को विकसित करती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। चाहें रहन-सहन, खाना-पीना, साज-सज्जा, काम करने के तरीके, घरों में आधुनिक वस्तुओं उपयोग यह दर्शाता है कि उनका जीवन आधुनिकीकरण के कारण बदल गया है। वर्तमान भारतीय ग्रामीण महिलाएं सहकारिता के सिद्धांतों को अपनाकर कई दुग्ध उत्पादन केन्द्रों का सफल संचालन कर रही है। अब वह वह केवल घरों में बच्चों को जनने का कार्य ही नहीं कर रही है अपितु देश व समाज को मजबूती प्रदान करने में अपना संपूर्ण योगदान दे रही है। इससे ग्रामीण महिलाओं के दायित्व बढ़ गए है। आज वह दोहरी भूमिका का निर्वतन कर रही है। घर में उनके पूर्ववत किए जा रहे कार्यों में एवं भूमिकाओं में बहुत बड़ा बदलाव नहीं आया है। साथ ही उनके बाहरी कार्य विस्तृत हुए है। इससे महिलाओं को शारीरिक एवं मानसिक चुनौतियां अधिक मिल रही है आज वह अधिक जिम्मेदारी वाला तार्किक जीवन जी रही हैं तथा अपने बुद्धि विवेक के आधार पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह योगेन्द्र (2014) माडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, रावत पब्लिकेशन जयपुर
2. अमर उजाला रूपायन, 24 सितम्बर 2010 ग्वालियर पृ. क्र.2
3. डॉ. रानी, आशु (1999) महिला विकास कार्यक्रम, ईनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर पृ. सं 19
4. मैरियन लेवी कान्ट्रासटिंग फेक्टर इन मॉडनाइजेशन ऐज चाइना एण्ड जापान 1955
5. डॉ. सुकण्ठा प्रसाद शुक्ला व अन्य (2019), महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति उमारिया जिले के विशेष सन्दर्भ में वाल्यूम 7 2019 इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोशल सांइसेज